प्रथम अध्याय

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रस्तावना

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना बहुआयामी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। सर्वेश्वर जी का गद्य और पद्य दोनों पर समान अधिकार है। सर्वेश्वर एक ओर कवि हैं, तो दूसरी ओर सफल कहानीकार,उपन्यासकार, नाटककार, पत्रकार, अनुवादक, संपादक, और बाल-साहित्यकार हैं। अपने साहित्य में उन्होंने आज की व्यवस्था पर भरपूर व्यंग्य कसा है। प्रतिभाशाली नाटककार के रुप में सर्वेश्वर चिरपरिचित हैं। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी के नाटक समय की यथार्थता का दस्तावेज है और एक जीवंत व्यंग्य भी। उन्होंने अपनी कहानियों द्वारा सामाजिक विसंगतियों और अमानवीय प्रवृत्तियों का पर्दाफ़ाश किया है। आधुनिक कवियों में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना अनुठे व्यक्तित्व के लिए विशेष रुप से प्रसिद्ध हैं तथा नई कविता के आंदोलन में उभरे सशक्त हस्ताक्षर हैं। ऐसे महान प्रतिभा संपन्न साहित्यकार के जीवन परिचय के साथ-साथ व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने का यहाँ प्रामाणिक प्रयत्न किया जा रहा है-

[अ] जीवन परिचय

१.जन्म :-

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी का जन्म १५ सितंबर, १९२७ ई. को गुरुवार के दिन बस्ती जिले के पिकौरा नामक ग्राम में हुआ। उनका घरेलु नाम 'मुन्ना बाबू' था, घर वाले इसी नाम से पुकारते थे।

२.माता :-

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी की माताजी का नाम श्रीमती सौभाग्यवती सक्सेना था। वे शासकीय हायस्कूल में अध्यापिका थीं। वे जीवनभर अस्वस्थ और अर्थ संकट से लड़ती रही।

उन्होंने सर्वेश्वर को लाड़-दूलार के साथ उन्नति के पथ पर अग्रेसर किया । सक्सेना की माता उनकी प्रेरणा रही,इसलिए तो सर्वेश्वर जीवनभर संघर्ष करते रहे ।

३. पिता :-

सर्वेश्वर जी के पिताजी का नाम विश्वेश्वर सिंह सक्सेना था।कविता करना उनका शौक था, लेकिन वे अपने बेटे सर्वेश्वर को कविता करने से मना करते थे।उनका अपना व्यवसाय था।उसमें कोई खास आमदनी नहीं मिलती थी।सन् १९६७ ई.में उनकी मृत्यु हो गयी ।

४. बाल्यकाल :-

सर्वेश्वर का बचपन बस्ती में व्यतीत हुआ । बस्ती एक छोटा-सा कस्बेनुमा शहर है; जिसके चारो ओर दूर-दूर तक खेतों का जाल बिछा हुआ है । शहर के चारो ओर ताल-तलैया की शोभा अनुठी ही है । प्रकृति तथा खेतों के बीच में साहित्यकार सर्वेश्वर का बचपन प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका । आर्थिक-संघर्ष और पारिवारिक-कलह का सामना उन्हें बचपन से ही करना पड़ा ; जिसका परिणाम भावी जीवन पर दिखायी देता है । बचपन से ही उनके व्यक्तित्व में निर्भयता , करुणा, आस्था, मानवता आदि विशेषताएँ दिखाई देती थीं, जो बाद में उनके रचना कर्म की आधार बन गई ।

५. शिक्षा :-

सर्वेश्वर ने अपनी आरंभिक शिक्षा बस्ती के एग्लो संस्कृत हाईस्कूल में पायी । उसके बाद सन् १९४४ ई. में क्वींस कालेज , बनारस में इण्टरमीडियट की परीक्षा दी । सन् १९४६ ई. में उन्होंने बी.ए. किया । सन् १९४९ ई. में प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की । एम.ए. में विजयदेवनारायण साही उनके सहपाठी थे । अपने शिक्षकों में वे डा. धीरेंद्र वर्मा , रामचंद्र शुक्ल तथा रामकुमार वर्मा की तारीफ़ करते थे । यह वह समय था , जब प्रयाग विश्वविद्यालय उत्तरी भारत की प्रतिभाओं का केंद्र बना था ।

६. पारिवारिक जीवन :-

सर्वेश्वर के परिवार की आर्थिक स्थिति सोचनीय थी। माता-पिता की मृत्यु के उपरान्त उनके हालात और अधिक बिगड़ गये। सर्वेश्वर परिश्रमी होने के कारण स्वयं अपनी आर्थिक जरुरतों का प्रबंध करते थे। बचपन में आत्म-निर्भर बनना उन्होंने सीख लिया था। सर्वेश्वर जी का विवाह २३ जून, १९४७ ई. को पीलीभीत निवासी श्री सच्चिदानंद वर्मा की पुत्री 'आनंदी देवी' (विमला) से हुआ। सर्वेश्वर सबसे अधिक प्रेम अपनी पत्नी से करते थे। सन् १९५१ ई. में उन्हें 'अभिजीत' नामक प्रथम पुत्र की प्राप्ति हुई, लेकिन सन् १९५४ ई. को उसकी बरेली में मृत्यु हो गई। सितंबर, १९५७ ई. को दिल्ली में पुत्री 'विभा' का जन्म हुआ और फिर अप्रैल, १९६२ ई. को लखनऊ में द्वितीय पुत्री 'शुभा' ने जन्म लिया। जीवन-संगिनी विमला की मृत्यु ४ जुलाई, १९६६ ई. को दिल्ली में हो गयी। इससे उनके जीवन में उदासीनता आ गई। उनके बच्चों का पालन-पोषण यशोदादेवी (सर्वेश्वर की पत्नी की बुआ) ने किया। कुल मिलाकर उनका पारिवारिक जीवन अन्त तक संघर्षमय रहा। परिश्रम, कर्तव्य-पालन, निष्ठा, निरंतर संघर्ष उनके जीवन के अंग रहे।

७. कार्यक्षेत्र :-

सर्वेश्वर का कार्य विस्तृत था। एम. ए. के पश्चात उन्होंने एक स्कूल में अध्यापन कार्य किया, लेकिन वह अधिक समय तक नहीं चल सका। तत्पश्चात् सन् १९४९ ई. में उन्होंने इलाहाबाद में प्रशासकीय कार्यालय में यु.डी.सी. के पद पर कार्य किया। सन् १९५५ ई.में आकाशवाणी दिल्ली के समाचार विभाग में हिंदी अनुवादक के रुप में उनकी नियुक्ति हो गई। सन् १९६० ई. में आकाशवाणी लखनऊ में सहायक प्रोड्युसर पद पर कार्यरत थे। सन् १९६४ ई. में उनका स्थानातंरण भोपाल को हुआ। इसी वर्ष वे इंदौर चले गये। सन् १९६४ ई. में उन्होंने आकाशवाणी की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। सितंबर, १९६७ ई. में 'दिनमान' के उपसंपादक नियुक्त हुए और सन् १९६७ ई. में दिनमान के संपादक बने। अक्तूबर, १९८२ ई. को उन्होंने 'पराग' बाल पत्रिका का संपादन कार्य संभाला।

८. सम्मान एवं पुरस्कार :-

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी को अनेक सम्मान प्राप्त हैं । साहित्य , पत्रकारिता , संपादन आदि क्षेत्र में उन्होंने देश की जो सेवा की है , उसके लिए उन्हें विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया हैं-

१. जंगल का दर्द (काव्य-संग्रह) पर सन् १९७६ ई. में उत्तर प्रदेश संस्थान का 'स्तरीय पुरस्कार' ।

२. जंगल का दर्द पर १९७६ ई. में मध्य प्रदेश सरकार का तुलसी पुरस्कार।

३. मार्च , १९८१ ई. में साहित्य कला परिषद द्वारा सम्मान ।

४. सितंबर , १९८१ ई. में शब्दलोक अहमदाबाद (गुजरात) द्वारा सम्मान ।

५. खूँटियों पर टँगे लोग (काव्य-संग्रह) पर 'साहित्य अकादमी पुरस्कार'(मरणोपरान्त) ।

९. देहावसान :-

सर्वेश्वर अपने जीवन के अंतिम दिनों बाल-पत्रिका का संपादन करने लगे थे । वे मधुमेह की बीमारी से २० साल तक पीड़ित रहें । उन्होंने अपना ५७ वाँ जन्मदिन १५ सितंबर , १९८३ ई. को मनाया और २३ सितंबर , १९८३ ई . की रात्रि में एक बजकर चालीस मिनट पर दिल का दौरा पड़ने से उनकी मृत्यु हो गई । इसे संयोग मात्र कहा जायेगा कि सितंबर में उनका जन्म हुआ और सितंबर में उन्होंने संसार को सदैव छोड़ दिया ।

[आ] सर्वेश्वर दयाल सक्सेना : व्यक्तित्व

किसी साहित्यकार के व्यक्तित्व को देखते समय उसके दो पहलुओं पर प्रकाश डाला जा सकता हैं -

[क] बाह्य व्यक्तित्व ।

[ख] आंतरिक व्यक्तित्व ।

[क] सर्वेश्वर का बाह्य व्यक्तित्व :-

केशवचंद्र वर्मा सर्वेश्वर के बाह्य व्यक्तित्व के संदर्भ में कहते हैं कि " साँवले रंग का दुबला-पतला युवक पॅण्ट कमीज पहने , गले में एक रंगीन-सा रुमाल बाँधे बिखरे बाल आज से ४० साल पहले मैंने इसी सर्वेश्वर को देखा था । तरल-तरल सी आँखे भीतर भेदकर अपनी जगह बनाती हुई । इलाहाबाद युनिव्हर्सिटी में हम लोग पढ़ने आये थे - वे बनारस से और मैं फैजाबाद से ।"[१] उनके चेहरे पर अलग प्रकार की आभा हमेशा रहती । इस प्रकार सक्सेना जी के चेहरे से उनका बाह्य व्यक्तित्व साफ झलकता है । उनका चेहरा गंभीर चिंतनशील रहता था। उनके चेहरे पर हमेशा स्वाभिमान की दमक विद्यमान थी । यही उनकी बाह्य व्यक्तित्व की पहचान बनी रही ।

[ख] आंतरिक व्यक्तित्व :-

सर्वेश्वर जी का अंतरंग समझने के लिए उनके चारित्रिक विशेषताओं को समझना आवश्यक है । उनके व्यक्तित्व की कुछ विशेषताएँ इसप्रकार हैं-

१. परिश्रमी एवं आत्मनिर्भरता :-

सर्वेश्वर के परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी । पारिवारिक आर्थिक अभावों का प्रभाव शुरु से ही से उन पर पड़ा था । वे इतने परिश्रमी व्यक्ति थे कि अपनी पढ़ाई की आर्थिक व्यवस्था का प्रबंध खुद ही करते थे । परिवार के संस्कारों ने उन्हें आत्मनिर्भर बनाया था इसलिए किसी से कुछ लेना उन्हें अच्छा नहीं लगता था ।

२. गरीबों के प्रति आस्था :-

सामान्य व्यक्ति के प्रति आस्थावान होने के कारण उनकी समस्याओं तथा दयनीय स्थिति के बारें में सक्सेना जी अधिक सोचते थे । उन्होंने अपने जीवन काल में गरीबी और शोषण से संघर्ष किया है । इसी कारण उनके मन में गरीबों के प्रति आत्मीयता थी । वे हमेशा दीन-असहाय लोगों का साथ देते थे साथ ही असहाय बच्चों के लिए फीस , पुस्तकें और भोजन सामग्री भी देते थे । मजदूरों का पक्ष-पोषण करें तथा लोकतांत्रिक अधिकारों और नागरिक स्वतंत्रता के लिए एकत्रित संघर्ष चलाएँ - ऐसा आवाहन उन्होंने बुद्धिजीवी वर्ग के लोगों से किया

था ।इससे उनकी गरीबों के प्रति होने वाली सहानुभूति दिखाई देती है। इस तरह खुले हाथों से वे सबकी मदत करते रहें ।

३. सहृदय व्यक्ति :-

सर्वेश्वर एक सहृदय व्यक्ति थे । वे सामाजिक कार्यों में किसी न किसी रुप में जुड़े रहें। उनके परिवार के सभी लोग समाज-सेवा के पक्षधर रहे हैं । परिवार-जनों की इस मनोवृत्ति का प्रभाव सर्वेश्वर पर भी पडा । रघुवीर सहाय के शब्दों में- " सर्वेश्वर जी हमारी पीढ़ी के उन लोगों में से थे , जो अकेले नहीं रहना चाहते थे । हर काम में वे लोगों को अपने साथ लेते थे और लोगों का भी साथ देते थे । उनका अपना साथी मित्रों से और उनसे भी जो बहुत से आंदोलन में उनके साथ थे, उनके साथ संबंध बहुत गहरा था । लेकिन इसके बावजुद भी वे कहीं सबसे अकेले थे।समाज की समज उन्होंने अपने बहुत गहरे और निजी कष्टों में हासिल की ।"[२]

४. समाजसेवक :-

सर्वेश्वर समाज सेवा के लिए हमेशा तत्पर थे । समाज सेवा करना अपना धर्म समझते। कहीं आवश्यकता होती , तो वे तुंरत पहुँचते । दिल्ली , लखनऊ और इलाहाबाद आदि शहरों में उन्होंने समाज सेवा का कार्य किया है । चेचक रोग से संतप्त लोगों की चौबीस-चौबीस घटों तक सेवा करते। अपने मित्रों के छोटे-छोटे दुःखों में सहभाग लेते थे। उनके विचार मानवतावादी होने के कारण मानवीय स्तर पर सेवा करने में कभी भी संकोच नहीं करते थे । उनके हृदय और हाथ समाज सेवा के लिए सदा खुले रहे और जीवन पर्यंत उनकी यह भावना बनी रही ।

निःसंदेह उन्होंने जीवन की अंतिम रात्रि तक दूसरों के कार्य करने से मुँह नहीं मोड़ा । समाज को बदलने के प्रयत्न में हमेशा जुड़े रहते थे । अतः वे एक सच्चे समाजसेवक थे ।

५. विद्रोही :-

सर्वेश्वर का व्यक्तित्व विद्रोही था । उनमें विद्रोही व्यक्तित्व के बीज बचपन में ही बोये थे । उनकी दृष्टि नये समाज पर टिकी थी । उनका विद्रोह वर्तमान व्यवस्था में निहीत मौकापरस्ती को देखकर पनपता रहा । इसी कारण वे परिस्थिति से समझौता न करके जीवन

के हर क्षेत्र में विद्रोह करते रहे । उनकी कविता तथा नाटकों में उन्होंने सामाजिक , राजनीतिक , आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तन लाने के लिए विद्रोह व्यक्त किया है । उन्होंने सामाजिक व्यवस्था के प्रति आक्रोश प्रकट किया है , साथ ही जहाँ मानवीय अस्मिता ; अन्याय और शोषण का शिकार हुई है , वहाँ लोकतंत्र और राजतंत्र की व्यवस्था पर चोट की है । वे जीवन में परिवर्तन आवश्यक मानते हैं । सर्वेश्वर एक ऐसा व्यक्ति हैं , जिसने समाज में व्याप्त विसंगतियों , विडंबनाओं को देखा है तथा मुल्यहीनता का अनुभव किया। इसमें परिवर्तन लाने के लिए ही वे विद्रोह करते रहें ।

६. अलिप्तता :-

सर्वेश्वर का जीने का अंदाज निराला था । वे भीड़-भाड़ तथा चकाचौंध की दुनिया से दूर रहते थे । वे एक तटस्थ चिंतक , स्थितियों के विश्लेषक तथा कविता को जीवन का अनिवार्य अंग मानने वाले थे । वे किसी भी पार्टी के सदस्य नहीं थे । सदस्य होना उनके व्यक्तित्व के खिलाफ था । इन सबसे अलग रहकर वे जीवन व्यतित करना चाहते थे । उनकी अपनी अलग राय थी । हरपल संघर्ष करने तथा उसकी अभिव्यक्ति देने की क्षमता उनमें थी । इस अलिप्त वादी गुण के कारण किसी दल से वे बँधकर नहीं रहें ।

७. ग्रामीण जीवन से लगाव :-

सर्वेश्वर का जन्म साधारण परिवार में हुआ था । उनके जीवन का अधिक समय बस्ती गाँव में बीता था । इसलिए ग्रामीण परिवेश के प्रति उनके मन में अत्यंत प्रेम था । उनपर देहाती जीवन के संस्कार पड़े थे। उनके साहित्य में ग्रामीण वातावरण अपनी विशेषताओं के साथ चित्रित हुआ है । ग्रामीण संस्कार के प्रभाव ने सर्वेश्वर को महानगरीय सभ्यता के भीतर बैचेन रखा । वे कभी शहर से समझौता नहीं कर सके । तभी तो उन्हें दिल्ली की सड़कें कुआनो नदी जैसी दिखाई देती थी । महानगर के कोलाहल में वे शहरी सभ्यता से घबराते रहें।इसके विरुद्ध वे ग्रामीण संस्कारों के कारण चरवाहों , मजदूरों , किसानों से तादात्म्य स्थापित कर सकें । इससे पता चलता है कि उन्हें ग्रामीण जीवन से अधिक लगाव था ।

८.स्पष्टवादिता :-

स्पष्टवादिता , निर्भरता , स्वाभिमान और भावुकता उनके व्यक्तित्व के खास पहलु हैं। जिन्हें नजर अंदाज नहीं किया जा सकता । स्पष्टवादिता , निड़रता के कारण उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में फैले अन्याय , अत्याचार , पाखण्ड और आडंबर का विरोध किया । सर्वेश्वर एक युगांतकारी रुप में हमारे सामने आते हैं। सर्वेश्वर बनावट से दूर रहते थे। वे जो काम करते थे सोच समझकर करते ताकि कभी पछताना न पड़ें। वे खुद गलत काम करते नहीं थे और गलत काम करने वालों को बर्दाश्त नहीं करते । सर्वेश्वर स्वयं कहते हैं " मेरे तीन सबसे बडे साथी हैं- विपत्ति , संघर्ष , निराशा। बचपन से ही वे साथ रहे है और जैसा मेरा दर्रा है आगे भी रह सकते हैं। इनसे एक बात मैंने सीखी है , खरी बात कहने में सबसे आगे रहना। अपने साहित्य के माध्यम से भी मैं खरी बात ही कहना चाहता हूँ। क्या कविता , क्या कहानी सबमें अभिव्यक्ति के लिए व्यंग्य मेरा सबसे बड़ा साथी है। लोगों का खयाल है , रोजमर्रा की जिंदगी में अधिक बोलता हूँ।"[3]

९. निष्पक्षता :-

सर्वेश्वर निष्पक्ष व्यक्ति थे। उनका व्यक्तित्व चिंतन , विनम्रता , सौजन्य और कर्म-साधना से परिपूर्ण था। उनके मन में विरोधियों के प्रति कभी बुरा विचार नहीं आया। वे अपने व्यक्तित्व से सभी का मन जीत लेते थे। उनके स्वभाव के बारे में 'तीसरा सप्तक' में कहा गया है कि "स्वभाव से अच्छा न बुरा , बाहर से गंभीर , सौम्य , पर भीतर से वैसा नहीं। विपत्ति , संघर्ष और निराशाओं से घनिष्ट परिचय के कारण जरुरत पड़ने पर खरी बात कहने में सबसे आगे रहते। अपनों के बीच बेगानों-सा रहने की और बेगानों को अपना समझने की मुख्य आदत थी। काहिली-चुस्ती , सोचना अधिक करना कम , अपनी लीक पर चलना और किसी की परवाह न करना ये उनके मुख्य दोष हैं, दूसरों की दृष्टि में। आकांक्षा कुछ ऐसा करने की , जिससे दुनिया बदल सके।"[४] मन का असंतोष और मित्रों का सहयोग उनकी संपत्ति थी।

१०. प्रेरक व्यक्तित्व :-

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

सर्वेश्वर का व्यक्तित्व कई लोगों को प्रेरणादायी सिद्ध हुआ है । उन्होंने युवा कवियों को नये ढंग से काव्य सृजन की प्रेरणा दी है । इसीलिए आज के अधिकांश युवा कविताओं पर सर्वेश्वर के सामाजिक , आर्थिक , राजनीतिक व्यंग्य ने युवा वर्ग को आंदोलित करते हुए झकझोरा है । सर्वेश्वर की इस तरह की कविताओं ने धुमिल , मलयज , लीलाधर जगुडी , मंगेश डबराल , मणि मधुकर , रमेश गौड जैसे अनेक कवियों को प्रेरणा प्रदान की है । सर्वेश्वर में ऐसा कुछ रहा है , जिससे किशोर कल्पना का उत्तेजित तथा नई अंतःदृष्टि और युवावर्ग को नई ज्ञानात्मक शक्ति की स्फूर्ति मिलती रही ।

उस समय की कविता के प्रभाव की साक्ष्य देते हुए जगदीश गुप्त ने लिखा है "सर्वेश्वर उन कवियों में प्रमुख हैं , जिनकी कविताओं ने छठे दशक के आरंभ में ही मुझे नई कविता की शक्ति , विश्वास , सामर्थ्य के प्रति गहराई से आश्वस्त किया था । जो विश्वास आधुनिक युग बोध से उनकी सच्ची और मार्मिकता ने मुझे उस समय और उसके बाद दिया , उसके सहारे मैंने निर्भिक होकर 'नई कविता' की लडाई लडी ।"[५]

इस प्रकार सक्सेना जी के आन्तरिक व्यक्तित्व में परिश्रमी एवं आत्मनिर्भर वृत्ति , गरीबों के प्रति आस्था , सहृदयता, समाज सेवा, विद्रोह , अलिप्तता , ग्रामीण जीवन से लगाव , स्पष्टवादिता , निष्पक्षता , प्रेरकता आदि गुण पाए जाते हैं ।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना : कृतित्व

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार हैं । उनका रचना संसार बहुत व्यापक है । उनके साहित्य संदर्भ में यशपाल जैन कहते हैं कि " सर्वेश्वर का साहित्य निराशा में लड़ते हुए आदमी को रोशनी देता ।"[६] वे एक सफल कवि होने के साथ-साथ कहानीकार , नाटककार भी हैं । सर्वेश्वर का लेखन काल ४० वर्षों का रहा है । उनका साहित्य क्षेत्र में विशिष्ट योगदान रहा है । सर्वेश्वर की अब तक प्रकाशित रचनाएँ इस प्रकार हैं -

कहानी संग्रह

कविता के अतिरिक्त सर्वेश्वर ने कहानी के क्षेत्र में भी हिंदी साहित्य को योगदान किया । सर्वेश्वर की पहली कहानी वाराणसी से प्रकाशित होने वाली 'क्षत्रिय मित्र' पत्रिका से प्रकाशित हो चुकी थी । उनके दो कहानी संग्रह प्रकाशित हैं-

अ.क्र.	कहानी संग्रह का नाम	प्रकाशन वर्ष
१.	कच्ची सड़क	१९७८
२.	अंधेरे पे अंधेरा	१९७९

उपन्यास

सर्वेश्वर ने उपन्यास विधा में भी अपना योगदान दिया है । उनके कुल मिलाकर तीन उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं । उनके उपन्यासों में तत्कालीन समाज का पूर्ण प्रतिबिब दिखाई देता है। ये उपन्यास निम्नप्रकार हैं-

अ.क्र.	उपन्यास का नाम	प्रकाशन वर्ष
१.	उड़े हुए रंग	१९७४
२.	पागल कुत्तों का मसीहा	१९७७
३.	सोया हुआ जल	१९७७

नाटक

साहित्य की अन्य विधाओं की तरह नाटक में भी सक्सेना का योगदान महत्वपूर्ण है । उनके नाटक प्रभावशाली हैं । वे एक समर्थ नाटककार के रुप में हमारे सामने आ जाते हैं। उनके निम्नलिखित नाटक हैं -

अ.क्र.	नाटक का नाम	प्रकाशन वर्ष
१.	बकरी	१९७४
२.	लडाई	१९७९
३.	अब गरीबी हटाओ	१९८१

एकांकी

सक्सेना जी ने साहित्य की प्रत्येक विधा का निर्माण किया है । एकांकी निर्माण में उन्हें विशेष रुचि रही । एकांकी विधा उनसे अछूती न रह सकी । उन्होंने एकांकी का लेखन इस प्रकार से किया -

अ.क्र.	एकांकी का नाम	प्रकाशन वर्ष
१.	कल भात आएगा	१९७९
२.	हवालात	१९७६
३.	रुपमती बाज बहादूर	१९७६
४.	होरी धूम मचोरी	१९७६

बाल-साहित्य

[क] बाल नाटक-

सर्वेश्वर ने किशोर उपयोगी साहित्य लिखा है । उनके बाल-नाटक उपदेश और उद्देश्यप्रधान हैं । बाल-नाटकों की सूची इसप्रकार हैं -

अ.क्र.	बाल-नाटक का नाम	प्रकाशन वर्ष
१.	भों-भों,खों-खों	१९७५
२.	लाख की नाक	१९६७
३.	हाथी की पों	१९६६
४.	अनाप-शनाप	१९७८

[ख] बाल कविताएँ -

सर्वेश्वर द्वारा रचित बाल साहित्य में 'बाल-कविताओं' का समावेश किया जाता है । सक्सेना ने बाल-साहित्य में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है । बाल कविताओं की रचनाएँ इसप्रकार हैं -

अ.क्र.	बाल-कविता संग्रह का नाम	प्रकाशन वर्ष

१.	बतूता का जूता	१९७१
२.	महंगू की टाई	१९७४
३.	बिल्ली के बच्चे	१९७३
४.	नन्हा ध्रुवतारा	

कविता संग्रह

सक्सेना तीसरा सप्तक के प्रमुख कवि थे। लखनऊ से प्रकाशित होने वाले 'आर्या मित्र' पत्रिका में उनकी पहली कविता प्रकाशित हो चुकी है। फिर उनकी कविताएँ 'प्रतीक' में प्रकाशित होने लगी। कवि के रुप में अज्ञेय जी ने सर्वेश्वर को 'तीसरा सप्तक' में स्थान दिया, तो उनके नाम की चर्चा नये कवियों में होने लगी। सर्वेश्वर के अनेक काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। जो निम्नप्रकार हैं -

अ.क्र.	कविता संग्रह का नाम	प्रकाशन वर्ष
१.	तीसरा सप्तक सं. अज्ञेय	१९५९
२.	काठ की घंटियाँ	१९५९
३.	बाँस का फूल	१९६३
४.	एक खुनी नाव	१९६६
५.	गर्म हवाएँ	१९६९
६.	जंगल का दर्द	१९७६
७.	खूँटियों पर टँगे लोग	१९८२
८.	कविताएँ-१	१९७८
९.	कविताएँ-२	१९७८
१०.	क्या कहकर पूकारुँ (प्रेम कविताएँ)	१९८४

यात्रा साहित्य

इस विधा में उन्होंने कोई विशेष योगदान नहीं दिया है । 'यात्रा साहित्य' के रुप में सक्सेना जी की एक ही कृति प्रकाशित है ।

अ.क्र.	यात्रा साहित्य का नाम	प्रकाशन वर्ष
१.	कुछ रंग कुछ गंध	१९७६

अनुवाद

सर्वेश्वर कविता , कहानी , उपन्यास तक अपने आपको सीमित नहीं रख सके । उन्होंने अनुवाद कार्य भी किया । सक्सेना ने सोवियत देश की कुछ कहानियों का हिंदी भाषा में अनुवाद किया है । जैसे ;

अ.क्र.	रचना का नाम	प्रकाशन वर्ष
१.	सोवियत कथा-संग्रह	१९७८

संपादन

अपने साहित्य निर्माण के साथ-साथ सक्सेना जी ने बड़ी कुशलता से पत्र-पत्रिकाओं में संपादन कार्य भी सफलतापूर्वक किया है । उन्होंने संपादक की भूमिका को बड़ी अच्छी तरह से निभाया है । जैसे;

अ.क्र.	संपादित कृति का नाम	प्रकाशन वर्ष
१.	समशेर की कविताएँ	१९७१
२.	नेपाली कविताएँ	१९८२

पत्रकारिता-

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना एक सफल पत्रकार थे । सफल पत्रकार बनने के लिए जितने भी गुण आवश्यक होतेहैं, वे सभी गुण सक्सेना में पाये जाते हैं । उन्होंने विभिन्न पत्रिकाओं का संपादन किया है । सक्सेना जी के विविध प्रकार के लेखों का संकलन एक ही

कृति में किया है । पत्रकारिता के इस योगदान के संदर्भ में निम्नलिखित रचना का उल्लेख किया जाता है -

अ.क्र.	कृति का नाम	प्रकाशन वर्ष
१.	चरचे और चरखे	-------

व्यक्तित्व और कृतित्व का परस्पर संबंध

सर्वेश्वर जी के व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर गहरा प्रभाव पडा है । जिस परिवेश में उनके व्यक्तित्व का विकास हुआ है , उस परिवेश से संबंधित समस्याओं को उन्होंने अपने कृतित्व में स्थान दिया है । सर्वेश्वर का जन्म देहात में हुआ था । उनके जीवन का अधिकांश समय ग्रामीण परिवेश में बीता था । इसी कारण उनके साहित्य में अपनी समस्त विशेषताओं के साथ ग्रामीण परिवेश चित्रित हुआ है । देहात के संस्कारों के कारण वे शहर से समझौता नहीं कर सकें । तभी तो दिल्ली की सड़कें उन्हें 'कुआनों नदी' जैसी लगती थीं ।

सक्सेना का व्यक्तित्व विद्रोही होने के कारण कविता तथा नाटकों द्वारा उन्होंने सामाजिक , आर्थिक , राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन लाने का प्रयास किया है । यह विद्रोह 'लडाई' नाटक का सत्यव्रत और 'बकरी' के युवक के द्वारा व्यक्त है । इनके नाटकों में चित्रित गरीबों तथा शोषितों में लोक मंगल की भावना विद्यमान है।सक्सेना खरी बातें करने में आगे रहे हैं ; जैसे, लडाई का प्रमुख पात्र सत्यव्रत अपने जीवन में कठिनाईयों का सामना करते हुए सच्ची बात कहने से किसी से डरता नहीं।सर्वेश्वर उनके अपने वास्तविक जीवन में इसी तरह जीते रहे हैं ।

सर्वेश्वर के स्वभाव से पता चलता है कि वे जल्दी बिगड़ जाते थे और जल्दी शांत हो जाते थे । किसी दल या पार्टी का सदस्य होना उनके व्यक्तित्व के खिलाफ़ था । बकरी का नायक और लडाई का सत्यव्रत इसका समर्थन करते हैं ।

इस तरह सक्सेना के पूरे साहित्य में सामाजिक , आर्थिक , राजनीतिक क्षेत्र की विसंगतियों पर व्यंग्य है । उन्होंने जो देखा भोगा है , उसी परिवेश के लोगों का जीवन संघर्ष ही

उनकी रचनाओं के केंद्रीय विषय रहे हैं। सर्वेश्वर जी का साहित्य जीवन से सीधा साक्षात्कार कराता है। इसलिए उनकी प्रत्येक रचना में किसी-न-किसी रुप में उनका व्यक्तित्व प्रतिबिंबित हुआ है।

निष्कर्ष

सारांश रुप में कहा जा सकता है कि सर्वेश्वर जी का बचपन साधारण परिवार में संघर्ष और विपत्तियों के बीच बीता। पिताजी के विरोध के बावजूद भी वे साहित्य साधना में मग्न रहें। माता-पिता की मृत्यु हो गई और उसके बाद अनेक कठिनाइयों के साथ सामना करना पड़ा। ऐसी अवस्था में भी वे साहित्य सृजन में जुड़े रहे। शिक्षा के दौरान अपने बलबुते पर खड़े रहे और आर्थिक दृष्टि से सक्षम बने।

सर्वेश्वर के व्यक्तित्व के अनेक पहलु उजागर होते हैं। अपने जीवन में उन्होंने कई समस्याओं का संघर्ष किया। एक ओर ; आत्म-विश्वास , दृढ़ता , स्पष्टता , ओज , जोश , उत्साह , प्रतिभा संपन्नता आदि गुणों के कारण हिंदी साहित्य जगत में उन्होंने अपना अस्तित्व सिद्ध किया है तो दूसरी तरफ समाज के प्रति अपनी कर्तव्य भावना को समझकर समाज सुधार का कार्य किया है। डॉ. महेश दिवाकर ने कहा कि "सर्वेश्वर रुपी मोती को यदि नई कविता रुपी माला से पृथक कर दिया जाये , तो इस माला की बहुत महत्वपूर्ण कड़ी टूट जाएगी।"[७]

अतएव साहित्य की प्रत्येक विधा में सहयोग देने के कारण सर्वेश्वर जी को प्रतिभा संपन्न साहित्यकारों की पंक्ति में बिठाया जाता है।

संदर्भ

१. डॉ. महेश दिवाकर - सर्वेश्वर का कविता लोक पृ.७

२. दिनमान पत्रिका अक्तूबर , १९९३ पृ.२४१

३. सर्वेश्वर सक्सेनाःसंपूर्ण गद्य रचनाएँ-३ पृ.११

४. तीसरा सप्तक (वक्तव्य) पृ.२७

५. डॉ. जगदीश गुप्त-नई कविताएँ : स्वरूप और समस्याएँ पृ.२७१

६. कालीचरण स्नेही - सर्वेश्वर और उनका साहित्य पृ. ९

७. महेश दिवाकर- सर्वेश्वर का कविता लोक पृ.१२